285
H90
MICROFILM

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi
1380/10नर
आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं० Acc. No. 285

Bharat ki Rashtriya Alha
or

॥ बन्देमातरम ॥

# भारत की राष्ट्रीय आल्हा

Bharat ki Vartman Dasha ka photo

—:o:—

Govt. of U.P. यानी in Hindi

## भारत की वर्तमान् दशा का फोटो


लेखक व प्रकाशक

बाबूराम पेंगोरिया।

writer Babuuram Paingoria


285

321/77

सर्वाधिकार सुरक्षित


प्रथमवार १००० { सन् १९३० } मूल्य =)

मुद्रक-पद्मसिंह जैन, जैन प्रेस, जौहरी बाजार आगरा।

891.431
P46B

IMPERIAL RECORD DEPARTMENT
RECEIVED.
10 DEC. 1930

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
GOVT. OF INDIA
Acc. No. 285
Date 6.12.71

* बन्देमातरम् *

# भारत की राष्ट्रीय आल्हा ।

## ईश्वर प्रार्थना

हे सर्वेश जगत प्रतिपालक अरु खल घालक नाम तुम्हार ।
दीन बन्धु और दीनानाथ हो दीनन वेगि उबारो आय ॥
न्याय शस्त्र की धारा द्वारा खल दुष्टन को देउ नशाय ।
हमको अब तक यही भरोसो करि हो न्याय हमारो आय ॥
यदि कुछ भूल करी प्रभु तुमने तुम्हरो न्याय नष्ट है जाय ।
न्यायी और दयालू तुम हो दया करो भारत पै आय ॥
अर्जी हमारी मर्जी तुम्हारी चाहे सो करो गरीब निवाज ।
हम अलपज्ञ जीव जग माहीं तुम सर्वज्ञ एक आधार ॥
अब सर्वज्ञ जीव भी बन कर अपनी प्रभुता रहे दिखाय ।
अद्वितीय वह बनना चाहें तब तुम कहां छुपोगे जाय ॥
याते बार २ यह विनती गिनती द्वै को देउ मिटाय ।
रहो अकेले तुम्हीं प्रभू इस भूमण्डल के भूपति आय ॥
हम सब जीव जगत में जितने रहें बराबर का पद पाय ।
जो कुछ तुमको प्रभु करनो है सो अब करो शीघ्र तुम आय ॥
नहीं तो शक्ति देउ गांधी को वह करि देंय हमारो काज ।
बार बार में विनवों तुमको मेरी सुनो टेर चित लाय ॥
देर है तुम्हारें अवश्य ज्यादा पर अन्धेर तुम्हारें नाय ।
यदि कुछ देर आपने कीनी कर्त्ता त्रिलोक भगवान् ॥

अकर्मण्यता बढ़े सृष्टि पर तो सब सृष्टि खाक है जाय।
फेर खाक में क्या रक्खा है खाको उड़े तुम्हारो जाय॥
तुम्हें मुनासिब तो यह नाही, है पूरा तुमको अधिकार।
प्रार्थना पत्र यानो अर्जी भेजूं श्री महाराज गरीब निवाज॥
कैसी दुर्दशा है भारत की अरु कैसें किन दई कराय।
ऐसे जीव कौन अरु कहां हैं उनकी खोज करो तुम आय॥
यही कारण है मेरी अर्जी का अपना नाम लिखूं अब जाय।
सैनिक पुत्र भारतमाता का पिता प्रभु तुम्हीं हो आपु॥
कौम हमारी भारतवासी पेशा देश भक्ति गृह कारावास।
पार्लीमेण्ट कांग्रेस हमारी वहीं न्याय का है स्थान।
एसके ऊपर हमला करके सब अधिकार छीन लिए जाय॥
अपनो मन मानी अब करि रहे हम अब कहां पुकारें जाय।
तुम्हीं न्ययी हो अब प्रभूजी सो अब न्याय करो तुम आय॥
(१) जो कछु लूटि हमारी है गई सो सब वापिस देउ कराय।
खर्चा हर्जा की भीं डिगरी कतई आपु देउ बनवाय॥
(२) मान हानि जो भई हमारी और जो खून खुशक भयो जाय।
ताकी डिगरी देउ दूसरी यह दावा है सिर्फ हमार॥

## त्रिनाय दावी

(अ) सुख सभ्यता नष्ट सब करि दई कर दई नष्ट श्रीतक जाय।
कहां स्वर्ग एक दिन था भारत रौरव नर्क बनाय दयो जाय॥
नन्दन विपन उजाड़ हमरा ताकों मरघट दयो बनाय।
स्वप्न सुख भारत में है गए गारत होत रसातल जाय॥
बन कर अतिथ यहां जो आए सो बनि बैठे प्रभू हमार।

हमने जानी अतिथ हमारे साधु रूप धरि पहुँचे आय ॥
स्वामी वह अब बने हमारे हमें गुलाम बनायो जाय।
ऐसा फुसलायो उन हमको अपना उज्जल रूप दिखाय ॥
कहं विषेल पूरे विषधर हाय डस लिया हमें उन आय।
नहीं दुख दर्द जरा भी साचा निकले भूरी जाति के नाग ॥
अनुपम धन अरु अन्त: शक्ती सबकी लूट लई करवाय।
स्वार्थ अन्ध बने वह ऐसे दई मनुजता तक बिसराय ॥
ऐसा दीन बनाया हमको सम्पत्ति शक्ति हरी सब आय।
उन सर्वस्व हमारा हरि लया दर २ भीक दई मगवाय ॥
बन भिखारी हम दर २ के यह गति भई हमारी जाय।
घर अरु द्वार हमारा अब भी पर अधिकार हमारा नांय ॥
नहीं छू सकत है हम उसको यह कैसा भीषण अन्याय।
ऐसा जाल बनाया उनने उसमें हमें फसायो जाय ॥
क्या मजाल है टस से मस हों पत्थर के बुत दये बनाय।
या कठपुतली हमें बनाया एक धागे से रहे नचाय ॥
हाथ पैर सब लुंजे कर दये नहीं हम उनको सके हिलाय।
नाड़ी की गति धीमी कर दई अर्ध मृतक हम दये बनाय ॥
पथ में कांटे उन बिछवाय दये नहीं पग धरा धरनि पे जाय।
बालन की शक्ती तक राकी * बनकारटा आर कारलगाय ॥
नहीं अर्जी पर करें गौर कुछ मरजी अपनी रहे चलाय।
बिन आज्ञा उनकी हम काले नहीं सांस ले सकते हाय ॥
चाहे दम छूट भले ही जावे नहीं उन्हें कुछ भी परवाह।
ऐसा विवश बनाया हमको बेबस पड़े २ बिलखांय ॥

---

* दफे १४४

बदल पैंतरे उछल २ कर नित प्रति हमको रहे सताय।
बेबस पड़े दुख हम भोगें घूट लहू के रहे चढ़ाय॥
घूट लहू के हम पी पीकर अपनो जीवन रहे बिताय।
या बन मुर्दे मरघट मांही हुँकारी सी रहे लगाय॥
दुख अमोघ व्यापि रहे हमको कहां तक उसे बतावें जाय॥
चुपचाप हम भोग रहे हैं चूं तक नहीं कर सकते हाय॥
चूं कहीं निकल जाय यदि मुखसे तो वह जोत्र लेंइ कढ़वाय।
आंसू निकलें यदि आँखों से तो फांसी तुरत देंइ लटकाय॥
कितने लाल हाय भारत के उन बेकुंठ दये पठवाय।
कितनेऊ कोमल पुष्प चमन के उन बिन कारण टोरे जाय।
सो सब पैरों तले रौंदि कर अन्य देश में पटके जाय॥
कितनेऊ उन पीस पीसकर हाय मिट्टी में दये मिलाय।
कितनेउ फूल चमन भारत के निकरत कली टोरि लइ जांय॥
कितने ही अनमोल रत्न उन इस भारत से दये निकार।
इतने पर भी शान्ति नहीं हैं दिन प्रति दिन वह रहे सताय॥
पैशाचिकता की भी हद है नहीं हद इनकी परे दिखाय।
नहीं दया का कण हृदय में बज्र हृदय उन लयो बनाय॥
बज्रपात करि २ के उनने सबरो रक्त सोखि लयो जाय।
कुछ साथी जयचन्द उन्हों के नहीं गोरे नहीं काले जान॥
उन पर भी ये ही दावा है दोनों ही प्रतिवादी मान।
यही हकूक हमारे हमको सबरे बापिस देउ कराय॥
जो दावा है प्रतिवादी पर सो सब तुम्हें दये सतलाय।

करें विकालत श्री गांधीजो है उनको पूरा अधिकार ॥
न्याय हमारो करिकें प्रभु उन पर डिगरी देउ बनाय ।
ताकों इजरा करके फिर हम उनकी कुर्की लेंइ कराय ॥
यदि कुछ माल हाथ नहीं आवे तो वारंट लेय करवाय ।
यही प्रार्थना प्रभू हमारी भारत वासी कहें पुकार ॥

## पूर्व भारत की हालत

प्रथम सुमिरों श्री गणपति को जो हैं पार्वती के लाल ।
सुमिरन करके पार ब्रह्म कों जगदम्बा को सीस नवाय ॥
कहों हकीकत कुछ भारत की तासे तुम्हें पता लग जाय ।
क्या हालत पहले भारत की क्या हालत है आज हमार ॥
पूर्व भारत की हालत का कुछ दिग्दर्शन देउं कराय ।
कैसी हालत थी भारत की कैसा वैभव कैसा ज्ञान ॥
लूट हुई भारत की कैसी तब भी था सोने की खान ।
इसीलिये कुछ ऐसी बातें अब मैं तुम्हें रहा बतलाय ॥
बादशाह महमूद गजनवी जो था गजनी का सरदार ।
सत्रह बार चढ़ा भारत पर तीस वर्ष के भीतर मांहि ॥
करी चढ़ाई नगरकोट पर मन्दिर लूट लीन करवाय ।
सातसौ मन सोने के सिक्के इतने ही वर्तन सुवरण क्यार ॥
दो बीसो मन सोना लूटा दो हजार मन चांदी जान ।
जवाहरात में हीरा पन्ना आदिक अन्य रत्न परिमान ॥
तोल बीस मन लूट पाट कर वानें गजनी को दये पठाय ।
उनकी संख्या असंख्य रुपया संख्या कहत हृदय घबड़ाय ॥

फिर मथुरा लूटी मूर्ति तोड़ीं छः सौ मन सोने की जान।
ग्यारह हीरा अद्भुत लूटे जो दुनियाँ में थे सरनाम॥
एक हज़ार २४ के सन में सोमनाथ पर पहुंचा जाय।
मन्दिर का भी विवरण लिख दूं जिससे तुम्हें पता लग जाय॥
छप्पन खम्मे थे मन्दिर के रत्नजटित थीं सब दीवार।
सोने की जंजीरों मांहो घन्टा घनन घनन घहराय॥
बजन फोरटी *मनका घंटा अरु जंजीर बजन मन साठ।
मूरत को जब तोड़न लागा नहीं तिल डिगो डिगाऐं जाय॥
करि२ यत्न हारि गयो मन में मूर्ति नहीं तिल सको डिगाय।
शिल्प ज्ञान को अद्भुनता का इससे तुम्हें ज्ञान हुइ जाय॥
जाय नजूमिन से तब पूछी तुम यह भेद देउ बतलाय॥
किस कारण मूर्ति नहीं टूटे सारी शक्ति लगाय दई जाय।
सोच सोच कर कहें नजूमी चुम्बक का इसमें आधार॥
पहले तोड़ो सब दीवारें फिर तुम कलस देउ उतराय।
उतरत कलस मूर्ती झुकि गई फिर तोड़ी वाने दीवार॥
गिर कर चूर चूर वह है गई टूक टूक होइ हृदय हमार।
अर्बों का धन सोना चांदी जवाहरात थी बे शुम्मार॥
लूट पाट गजनी को ले गयो वहां पर इसको देखा जाय।
डीक मार कर रोवन लागो अल्लाह अल्ला करी पुकार॥
इतना धन मैंने यह लूटा कैसे भोगूं इसको हाय।
मौत मूड़ पर मेरे चढ़ि रही दैया पौहमि लौट गई जाय॥
उन्नीस अर्ब रुपये की संख्या सब विद्वान् रहे बतलाय।

---

* ४० मन

सन् बारह सौ अरु छः ऊपर नादिरशाह पहुंचा आय ॥
वाने लूटो अति अनुपम धन जिसकी संख्या बे परिमान ।
सन् चौदहसौ २ कमजानों तैमूरलंग वहां फिर आय ॥
राशि २ धन वानेहु लूटो ले गए अपने मुल्क लदाय ।
बहुतक लूटें छोटी मोटी होती रहीं बराबर जाय ॥
इतनी लूट भई भारत की तब भी धन था अपरम्पार ।
फिर भी देखो क्या हालत थी ताजमहल से दिये बनाय ।
अर्बिनरु० उसमें लगि गयो जिसकी संख्या बे परिमान ॥
कुल्ल हाल रोज़े का लिक्खा ग्रंथ फारसी के दरम्यान ।
जो रखा है कलकत्ते में इम्पीरियल लायब्रेरी मांहि ॥
अर्बों रुपया था भारत में अर्बों का था यहां व्योपार ।
नहीं संख्या उसकी हो सकती धन का मिले न माना पार ॥
ऐसी घटनाओं के ऊपर कुछ अब ध्यान दिलाऊं जाय ।
ध्यान लगा कर तुम सुन लेना कैसा था भारत का हाल ॥
नहीं आजसा भु का नंगा परिपूर्ण था माला माल ।
मानसिंह प्रधान सेनापति जो अकबर का था सरदार ॥
जब वह भेंट करे अकबरसे तब क्या देता था कर भार ।
अठारह लाख तो एक दफे में करता भेंट आय दूरबार ॥
ऐसी भेंटें एक साल में करनी पड़ें उसे दो चार ।
जहांगीर के घर का खर्चा जो रनिवासन के दरम्यान ॥
सवा क्रोड़ और एक लाख था प्रति महीना का लेना जान ।
नूरजहां बेगम थी उसको जब उसके संग हुआ विवाह ॥

साठ क्रोड़ का हार खरीदा जो बाने वांइ दयो पहराय ।
अरु बहु तक गहने थे बेगम पर जिनकी कीमत बेशुमार ॥
एक भाई था उसका दनियाल जो था दक्षिण का महिपाल ।
उसके मरने पर उसका धन पहुंचा बीच आगरे आय ॥
सिर्फ जवाहर ही थे इतने कीमत साठ क्रोड़ अनुमान ।
कितना कोष खजाने में था जो था सिर्फ आगरे मांहि ॥
अकबर ने उसके जाचनको खिलजीखां को लिया बुलाय ।
हुकम दे दयो बादशाह ने जाचो कुल खजानो जाय ॥
तब खिलजी खां ने वह जांचा उसका भी तुम सुनो हवाल ।
चारसौ जोड़ा थे तखरो के एक हजार तुलइश्रा जान ॥
पांच महीना रात दिना वह तोला गया बराबर जाय ।
सोने के सिक्का ही तोले थे सो नहीं पूरे सको तुलाय ॥
तब अकबर ने हुकम दे दयो अब तुम बन्द देउ करवाय ।
नहीं जरूरत है अब हमको ताला मुहर देउ लगवाय ॥
यह हालत थी यहां पर धन की नहीं मिले था वारा पार ।
जैसा नाश आज भारत का अंगरेजन ने दयो कराय ॥
इसका कारण डिगवीसाहब और सरहेनरी रहे बताय ।
मांट गोमरी मांटन साहब और नाम भी देउं बताय ॥
सच्चा विवरण कच्चा चिट्ठा मेरिडिथ टौनसेड ने दिया बताय ॥

## गल्ले का भाव

अब भाव समझि लेउ तुम गल्ले का सन् १७ सौ के दर्म्यान ।
असी सेर चामल रुपया के साढ़े तीन मन गेहूं जान ॥

चीनी मन थी पौन रुपये घी था तीन घड़ी एक पाव ।
तेल बिके था चौसठ सेर का अन्य नाज छै मन थे जान ॥
यह तो भाव हाल का ही है वर्ष तीन सौ के अनुमान ।
औरंगजेब जब बादशाह था तब था यह गल्ले का भाव ॥
आठ मन चामल थे रु० के घी था ६ पंसेरी जान ।
गेहूँ भी मन चार बिके थे चीनी थी एक मन का भाव ॥
अन्य नाज तो इतने सस्ते भूसा में देंय उन्हें मिलाय ।
कितना खर्चा प्रतिव्यक्ती का पूरा २ देउ बताय ॥
॥=)॥ आना खर्चा था प्रतिजन १ मास का जानो जाय ।
छक्कम छका होता था इससे फक्कम फका नहीं कहीं दिखाय ॥
एक कमाता दस खाते थे नहीं फिकर का नाम निशान ।
अति आनन्द रूपसे भारतीय अपना जीवन रहे बिताय ॥
मौज करैं थे ध्यान धरैं थे उस ईश्वर का जानो जाय ।
दूध दही की नदिया बहतीं उसका है यह प्रबल प्रमाण ॥
मेग अस्थनीज कहता है भारत में मैं पहुंचा जाय ।
पानी के बदले दूध पिलाते करके पहुने का सतकार ॥
उसी दूध को तड़प तड़प कर लाखों बच्चे मर रहे आज ॥

## लार्ड क्लिायब

लार्ड क्लिायब भी कहता है शहर मुर्शिदाबाद समान ।
नहीं लन्दन करि सकता समता धन वैभव दोनों में जान ॥
यहां के वासी अधिक धनी हैं लम्बर है लन्दन दो जान ।
अब्बल दर्ज. यहां की हालत यह था उस लार्ड का व्यान ॥

## हालवेल

हालवेल साहब फरमाते ट्रेक्ट ओफ इन्डिया मांहि।
कैसे सब भारतवासी और ईमानदार लेउ जान॥
यदि किसी पुरुषको किसो पुरुषका कोइ वस्तु कहीं मिल जाय।
या कहीं किसीको धन मिल जावे जो संख्यामें अधिक महान।
चाहे कितना ही धन होवे नहीं छूता कोई उसको जाय॥
किसी जगह या किसी पेड़ से उसे टांग देता था जाय।
जो रक्षक रक्षा पर होता उसको खबर देइ पहुँचाय॥
जिसका होता था वह धन उसे वही लेता था पाय।
नहीं कोई छूता था परधनको नहीं कोई था बेईमान॥

## ऐमलुई भारत की सभ्यता

इससे बढ़ कर और सुनो तुम मिस्टर ऐमलुई की बात।
जो कोलिअर उपाधी जोड़ो तब जानो यह पूरा नाम॥
किस प्रकार भारत की अस्तुत करते हैं वह बारम्बार।
ऐ प्राचीन भारत की भूमा ऐ भारत की मानव जात॥
पूजनीय और स्मरणीय है नमस्कार है बारम्बार।
सहस्रों वर्ष कष्ट सहे तैंने पाशाविक अति अत्याचार॥
धन्य धन्य है तोकों भारत तिलभरि नहीं डिगा तू आज।
मैं तेरो श्रद्धा और प्रेम का स्वागत करता बारम्बार॥
ज्ञान और विज्ञान कला का तू ही है जग में अवतार॥
नमस्कार है नमस्कार है भारत तोकों बारम्बार।

हम पश्चिम यूरुप देश को तेरा भूतकाल दरकार ॥
करें उपस्थित तेरे हां गुण यही प्रार्थना एक हमार ।

## गोरे की नीचता

आज उन्हीं के गोरे भाई कैसी करें नीचता जाय ।
कैसे २ कुतसित कर्म करें वह मिस मेयो को ढाल बनाय ॥
मदर इण्डिया को छपवा कर अपना निज नीचत्व दिखाय ।
भारत को तो फुली निहारें अपना टेंट न उन्हें दिखाय ॥
क्या उपाधि हम उनको देवें पड़ हैं कर्मन के अनुसार ।
उनके पूर्वजन करी बन्दना अरु शिर अपनो दयो झुकाय ॥
उनके ही वंशज आज देख लो कैसी करें नीचता जाय ।
उसका भी कुछ विवरण लिखदूं अब बिन लिखे रहो न जाय ॥
स्वामी विवेकानन्द गए थे इनकी लन्दन के दरम्यान ।
वस्त्र गेरुआ सिर पर साफा चलते सड़क वहां की जांय ॥
एक यूरुपियन सभ्य देशने अपनी असभ्यता दई दिखाय ।
हाथ छड़ी थी उस मकट के उससे साफा दयो गिराय ॥
नहीं नीचता की हद राखो खिलखिलाय के परो हंसाय ।

## भारत कीअवनती टामिसमनारो

क्या कहता है टामिसमनारो जो है अधिक दिनों की बात ।
भारत में अंगरेजी राज्य से अधिक हुआ है भारी घात ॥
नहीं उन्नती हुई जरा भी अवनति अधिक हुई है जाय ।

## भारत का सर्वनाश अंग्रेजों ने किया

भूत पूर्व गवर्नर जनरल सरजान सोर भी रहे बताय।
नहीं उपकार हुआ भारत का पर अपकार हुआ है जाय॥
यह भी उनने साफ़ कह दिया है सिद्धांत अकट लेउ मान।
राज शक्ति यदि होइ विदेशी अनिवार्य उससे होइ हानि॥
यह तो बात कही उन्होंने यूरुप के प्रायः सभी विद्वान्।
स्वीकार करके कहते हैं सर्व नाश का यही प्रमाण॥
अंगरेजी शाशन से है गयो सर्व नाश भारत का जाय।

## मेरिडिथ टौन सेड शाशन की बुराई

मेरिडिथ टौन सेड ने लिखा एशिया ऐण्ड यूरुप के माहि।
भारत के व्यवसाय आदिको दोषयुक्त यह शाशन जान॥
सबसे अधिक दोष यह भारी हमरे शाशन के दरम्यान।
हमरे शाशन के होते ही जीवन सुख सब गए नशाय॥
हमरे आने से पहले था अति आनन्द अमोघ उछाह।
साहस और उत्साह उमंगे करती थीं पूरा प्रवाह॥
सभी कार्य पूर्ण होते थे बिना प्रयास सहज ही जाय।
भारतीयों के जीवन में थी विमल विरक्त सुख की चाह॥
नहीं जान सकते हम गोरे साधारण श्रेणी के मांहि।
अति पवित्र जीवन था उनका यह मेरा पूर्ण विश्वास॥
हम अँगरेजों के आने पर हाय अब है गयो सत्यानाश॥

## अपना माल भारत पर लादने पर विचार ।

हाऊस ओफ कामन्स सभा ने एक कमीशन दिया बनाय ।
वारिनि हैस्टिंग्स सरटामिसमनारो दोनों लार्ड जानों जाय ॥
और अधिक थे यह स्ट्राची सर जान मेल कम चार ॥
उनसे पूछा गया वहां पर भारत का सब हाल हवाल ।
आप कहें यह ठीक २ सब भारत के स्वभाव का हाल ॥
बनी यहां को जो चीजें हैं उन्हें खरीदेगा या नाहिं ।
प्रति उत्तर में यह जवाब था नहीं उसे कुछ भी परवाह ॥
सर्व तरह की चीजें वहां पर उसको आवश्यकता अनुसार ।
उसे प्राप्त हैं हर प्रकार से नहीं विलासता का वहाँ नाम ॥
वहां पर चीजें यहां से अच्छी कई गुनो होती तययार ।
एक दुशाला जो मैं ओढ़े हूँ आठ साल भये इसको जाय ॥
नहीं परिवर्तन किसी रूप का अब तक इसमें पड़ा दिखाय ।
यहां का बना अगर यह होता तीन साल भी चलता नाहिं ॥
सच्ची सुनो बात मैं कहता मुफ्त मिले यदि यहाँ का माल ।
तब भी मुझे पसन्द नहीं है मेरा तो है यही ख्याल ॥

## जुलाहों के साथ अत्याचार

देखो भाइयो ध्यान लगा कर भारत में यह अत्याचार ।
किस प्रकार से नष्ट हुआ है भारत का सारा व्यौपार ॥
वोल्टस ने अत्याचारों का पूरा विवर्ण दिया बताय ।
हमरे अत्याचारोंके कारणही भई दुर्दशा जुलाहिन क्यार ॥

सभी दस्तकारी के करता भोगि रहे हैं दुख अपार।
सभी प्रकार शिल्प की चीजें मुट्ठी में हम कर लई जाय ॥
किस प्रकार मुट्ठी में आई कैसे कैसे करि अन्याय
सभी जुलाहिन को बुलवाया भेजि २ कर चौकीदार ॥
जब हाजिर वह हुए आन कर शर्तें उनसे लईं करवाय।
लिखा पढ़ी कागज पर करके उनके दसखत लिये कराय ॥
नहीं हानि हम उनकी सोची अपनो लाभ साचलया जाय।
मनमानो कीमत पर उनको दयो बियानों हमने जाय ॥
यदि उनने नहीं लिया ब्याना तो वह जोर जुलम के साथ।
उनके कपड़नि में बँधवाय दयो और कोड़न की मार लगाय ॥
सरी अदालत पीट पाट कर बाहर उन्हें दयो कढ़वाय।
यह भी हुकम सुनाय दयो उनको नहीं वह करे किसो का काम ॥
इतनी कीमत कमती दोनी उन्हें बचे नहीं एक छदाम।
तिस पर भी षड़यन्त्र रचे यह अच्छे माल में ऐब लगाय ॥
सौ के साठि दये हम उनको तब टोटा उनको परि जाय।
घर घूरा उनका बिकवा कर सब नुकसानो लई चुकाय ॥
अत्याचारों से पीड़ित हो अपने छुटकारे के काज।
छोड़ दिया रुजगार सबों ने फिर भी वह सब पकड़े जांय ॥
पीट पाट और जोर जुलम से बुनने को करते लाचार।
नहीं उपाय उन्हें बचने का किसो रूप से पड़ा दिखाय ॥
कैसी है यह दर्द कहानी हाथ अंगूठे लए कटाय।

नहीं काम के योग्य रहे वह तब छुटकारो पायो जाय ॥
नहीं यहीं तक हद उन राखो अब आगे का सुनो हवाल ।
नहीं सन्तोष हुआ तव उनको किस प्रकार कर दयो लगाय ॥
प्रति सैकड़ा माल के ऊपर इस प्रकार कर दयो लगाय ।
छींट छपी पर अस्सी रुपया और तंजेब तोस लेउ जान ॥
चटाई ऊपर पिचासी रुपया चाय पै सड़सट दये लगाय ।
चीनी पर चौड़ानवें रुपया अरु तीनसौ अधिक चढ़ाय ॥
कालीमिर्च चारसौ रुपया हींग पै छः सौ बाईस जान ।
कपास की मन पन्द्रह रु० रेशम पै प्रति सेर चार लेउ जान ॥
इस प्रकार कर के लगने से नष्ट हुआ सारा व्यौपार ।
ऐसी हृदय विदारक बातें सुनि २ फटो कलेजा जाय ॥
कैसे सहन शील हम बनिकर अपनो नाश लयो करवाय ।
नहीं रुका तब भी यह कपड़ा गया विलायत को हर साल ॥
सन् सौलह सौ अठारह में कितना गया विलायत माल ।
एकलाख सत्ताईसहजार एकसौ चौबीस गांठि जानि लेउ जाय ॥
यह तो गांठें थीं कपास की अब कपड़े का सुनो हवाल ।
चौदह हजार आठ सौ सत्रे गाठें कपड़ा गया विलायत क्यार ॥
तेरह हजार और छः सौ गाठें अमेरिका में पहुँचो जाय ।
चौदह सौ कपड़ा की गाठें डेन मार्क में पहुँचो जाय ॥
नौ हजार और सात सौ चौदह गाठें पुर्तगाल के भी दरम्यान ।
अर्ब और ईरान देश में पहुँची गाठें सात हजार ॥
बंगाल के सुनो जुलाहे एक साल के अन्दर मांहि ।
कितना माल विदेशों भेजें पन्द्रह करोड़ का लेना जान ॥

## ईसामसीह

अब ईसा की सुनो बात तुम जो ईश्वर का था अवतार।
एक यात्रीथा रूस देश का अरुनोट विच था उसका नाम॥
तिब्बतके ही मस मठ मांहि उसे मिली थी एक किताब।
जो था जीवनचरित्र ईसाका पाली भाषा लिपि में जान॥
उसमें सब वृतान्त लिखा था ईसा का सब लेना जान।
इसराइल में वह पैदा भयो इक सामान्य गृह दरम्यान॥
वहाँ से रूठ चला वह भारत तेरह वर्ष उमर के मांहि।
हो नाराज पिता माता से फिर वह पहुँचा भारत आय॥
काशी आदि जगन्नाथ पुरी में करी आय विद्या अध्यान।
आर्यों द्वारा शिक्षा पाकर वापिस गया देश निज जान॥
नये धर्म का वहाँ पर जाकर उसने किया नवीन प्रचार।
इसी वजह से वहां पर उसको सूली पर था दिया चढ़ाय॥
यह प्रमाण भी यही बताता भारत था विद्या की खान।

## भारत की प्रशंसा।

सन चौदह और चार तीन को युगल रूप से जोड़ो जाय।
बादशाह शोहरुखका एलची अब्दुलरज्जाकथा उसका नाम॥
वह लिखता है निज पुस्तकमें शारी न मुतसुलके दरम्यान।
भारतवर्ष देश के माँहीं नहीं चोर का नाम निशान॥
माल करोड़ों का बिन मालिक रहता पड़ा जहां तहां जान।

भारत का वर्तमान इतिहास

## दूसरा खण्ड

प्रथम सुमिरों श्री गणपति को पार ब्रह्म को शीश नवाय।
फिर जगदम्बा को सुमिरन कर सुमिरों भारत के वह लाल ॥
जो भारत हित गा त है गए जो थे केहरि के उनहार।
नाम बताऊं उनके कहां तक हैं संख्या में कई हजार ॥
मातृ भूमि की बलि वेदी पर उन बलि अपनी दई चढ़ाय।
सुमिरन करके मातृ भूमि को अरु ईश्वर को शीश नवाय ॥
भारत का इतिहास बताऊं कुछ दिग्दर्शन देउं कराय।
सूक्ष्म रूप से उसका विवरण मैं अब तुम्हें देउ बतलाय ॥
ध्यान लगा करके सुन लेना भारत का कितना विस्तार।
अठारह लाख मील चौरस है जाको क्षेत्रफल लेउ विचार ॥
दो हजार और तीन सैकड़ा सोलह शहर यहां आबाद।
मनुष्य गणना उनके माँहीं तीन करोड़ पच्चीस हजार ॥
छः लाख सहस्र निवासी की संख्या में छः सौ पैंसठ और बढ़ाय।
इतने ग्राम सें भारत में जन संख्या भी देउं बताय ॥
साढ़े अट्ठाईस करोड़ जन उनमें बसरहे जो कृषकाकार समुदाय।
कितने जन हैं भारत मांही वह भी संख्या देउ बताय ॥
इकत्तीस करोड़ अरु पांच लाख में दस हजार लेउ और बढ़ाय।
बाकी संख्या तामें जोड़ो इतने जन करि रहे निवास ॥
यह भी विवरण और बताऊं कितने गांव कहां आबाद।
४ लाख और हजार ६८-५२७ गांव वृटिश भारत के मांहि ॥

१ लाख और हजार ८७- ३८ गाँव राज्य दरम्यान।
१५६१ शहर राज्य अंग्रेजी ७५५ राज्य दरम्यान॥
अब हिसाब तुम सुनो दूसरा कितने कितने कहां मकान।
सब शहरों में ६७ लाख है हजार ६५ चौदह मकान॥
५ करोड़ ८४ लाख ३२ हजार ३०५ दह ग्रामों के मांहि।
यह संख्या ग्रामों के घरों की सो मैंने तुम्हें दई बतलाय॥
तामें राज्य हुना अंग्रेजी ११ लाख मील दरम्यान।
७ लाख में सब रजवाड़े ६७५ कार रहे राज्य॥
पौने दो से बड़े बड़े राजा ५९० छोटे कार रहे राज्य।
२८३ तो कर देते बाकी स्वयं बने सरताज॥
मध्य भारत में ८० राजा मन्द्रास में जानों पाँच।
१५ मध्य प्रदेश बसे हैं ३४ बसे जाय पञ्जाब॥
२० राजपूताना मांही जानो २० बम्बई मांहि।
८१ मेसूर देश में १० बसे हैदराबाद॥
काश्मीर में एक नियत है दो संयुक्त प्रान्त के मांहि॥
६ नृप राज्य बड़ौदा का में इस प्रकार लेउ संख्या जान।
कितने सूबों में बसता है उस पर भी तुम धरना ध्यान॥
१५ सूबे हैं भारत में ब्रह्मा कुर्ग बम्बई जान।
मन्द्रास पञ्जाब और यू० पी० मध्य देश सीपी है जान॥
राजपूताना और देहली ऊपर बसे बिलोचिस्तान।
बिहार और बंगाल जान लेउ ताके ऊपर है आसाम॥
फ्रिरटियर नाम एक सूबे का और अण्डमन लेना जान।

## पृथ्वी की समस्त गणना

सब पृथ्वी की मनुष्य गणना एक अरब है अस्सी करोड़।
किस जाती की कितनो संख्या उसका भी अब कहूं निचोड़॥
५६ करोड़ तो ईसाई हैं ५४ करोड़ बौद्ध लेउ जान।
२२, यवन बसें दुनियां में २२ अर्द्ध भारत मांहि॥
सवा करोड़ यहूदी जानो ३२ लाख सिख सरदार।
यह सब संख्या है पृथ्वी की सो मैंने सब दई बताय॥
कितनी संख्या कहां २ पर है उन पर भी कुछ करो निगाह।
४० करोड़ चीन की संख्या अरु ६ करोड़ बसे जापान॥
१॥ करोड़ जन फारिस जानो या जानो ईरान।
४ करोड़ फ्रांस की संख्या १२ करोड़ अफरीका जान॥
अब अर्बो की संख्या देखो ४ करोड़ के है अनुमान।
अर्बी भाषा जो बोलत है बाकी २॥ करोड़ हैं जान॥
१८ करोड़ रूस की संख्या २२ लाख और अधिक बढ़ाय।
३ करोड़ इटली माहीं ६१ लाख लेउ और बढ़ाय॥
केनाड़ा में ८१ लाख हैं हंगरी में २ लाख और ५ हजार।
ग्रेटब्रेटेन में ४॥ करोड़ हैं इस प्रकार संख्या प्रमाण॥

## भारत प्रवासी

अब कितने बाहर भारतवासी उनका भी कुछ करूं बयान।
भूंख की ज्वाला ने जब मारे पहुंचे परदेशन में जाय॥
उनकी संख्या इस प्रकार है फीजी पहुंचे साठ हजार।
पौने ३ लाख हैं मारीसिसमें ट्रीनाडाट में १ लाख २६ हजार॥

नौ लाख भारतीय सिंहल द्वीप में युगरंडा में दस हज़ार।
थिंडचार्ड में दो हजार हैं और श्याम में चार हजार॥
गिलबर्ट द्वीप में बसें तीन सौ सेन्टलमेन्टस असी हजार।
न्यूज़ीलैंड में बसें पांच सौ दस हजार हैं जंजीबार॥
२५ हजार केनियां बस रहे हांककांग में ४ हजार।
दक्षिण अफ्रीका में संख्या एक लाख ६१ हज़ार॥
आस्ट्रेलिया में इनकी संख्या १६ हजार ६ सौ है जान।
२० हजार जमैका मांहीं बाहबास में जानो चार॥
इंडराज में दो सौ पहुँचे मोम बासा में पांच हज़ार।
सिचेलीज में पांच बस हैं बारबर्डीज़ एक है जाय॥
भारत प्रवासी से उद्धृत कर यह सब बंदा दिया बताय।

## पशुओं की हालत।

अब पशुओं की संख्या देखो कितनी है भारत के मांहि।
जब भारत देश अहिंसा वादी आत्म पूजन का स्थान॥
पशु संख्या १५ करोड़ है सर्व पशुन की लेना जान।
गाय बैल तो आठ करोड़ हैं बाकी अन्य पशु लेउ मान।
सुनो हाल तुम उनके बध का कब और कितने हुये हलाल॥
सन १९ से सन ९ तक यह पशु गये विदेशन जाय।
बत्तीस लाख हजार आठ में आठसौ नौ और देउ बढ़ाई॥
कीमत उनकी दो करोड़ थी पांच लाख और चार हज़ार।
तामें अधिक आठ सौ जोड़ी तीस रुपया और बढ़ाई॥

यह पशु गये जहाजों द्वारा अब स्थल का सुनो हिसाब ।
पन्द्रह लाख हजार पचहत्तर नौ सौ तीस भूमि की राह ॥
मूल्य लाख चौराहनवें रुपया उनका तुम सब जानो जाई ।
बसे कसाई भारत मांहीं शहरों और ग्रामा के दरम्यान ।
तीन लाख पैंतालीस हजार और नौसौ तीस अधिक लो जान ॥
वो भी वध करते लाखों का यह है यहां पशुओं का हाल ॥
पढ़ो रिपोर्ट सन् १९-१२ की वह सब हाल रही बतलाय ।
यह बूचड़खाने को संख्या है जो लाहौर शहर दरम्यान ॥
गो वध हुआ जून महीना में ५ हजार संख्या लेउ मान ।
५ हजार दिसम्बर में वध हुआ गाय बैल की संख्या जान ॥
यह तो संख्या है गौओं की अब बकरों का सुनो हवाल ।
पहले महीना १० हजार हुए २० हजार जून में जाय ॥
१० हजार अप्रैल मास में सन १३ में हुये हलाल ।
यूरुप को गए कितने यहाँ से २० २२ सन् के दरम्यान ॥
सहस्र ८४ गायें बछड़े भरि जहाज में दये लदाय ।
ब्रजिल जहाज मांहिं भरि करके गोरे ले गये उन्हें उठाय ॥
यह सब विवरण लिखा हुआ है सुनलो उस पुस्तक का नाम ।
सेन्ट्रअल ऐम० पी० कैटल शिप पुस्तक दरम्यान ॥
डा० जोशिया ऐस० आर० सी० किस प्रकार से लिया बताय ।
लेवरपुल कसाईखाना उसके प्रेसीडेन्ट का नाम ॥
मिस्टर डेविस खुद कहता है आंखों देखी घटना जान ।
जब यह भरे जायं जहाजन में फेनोपिन आयल देई डाल ॥

सुधि बुधि भूल जाय सब उनकी बोरा बन्दीसी देंइ कराय।
जगह कमी और तंगी के कारण एक दूसरे पर गिर जायं॥
पसली टूट जायं बहुतन की अब इंगलैंड पहुँचे जायं
आंखों देखी यह घटना है मिस्टर हरस रहे बताय॥
लटकी चमड़िन की हालत में वे बजार में बेचें जाय।
फिर उनकी वहां क्या गत होती हृदय थाम कर सुन लो हाल॥
औंधे मुंह लटका कर उनकी सजीव चमड़ा लेंइ उतार।
ऐसी हृदय विदारक बातें सुन सुन फटो कलेजा जाय।
४२ हजार गाय भारत में फौजन को नित काटी जांय॥
जीवन की बुनियाद हमारी किस प्रकार अब मिट रही हाय

## माल रफतनी

तिस पर भी और कृपा है उसका भी तुम सुनो हवाल।
इतना माल विदेशन जाता भारत क्यों न होय कंगाल॥
एक मिनिट का यह हिसाब है दिन भर का भो गुण परिणाम।
६० मन तो तिलहन जाता मूंगफली मन ५५ जान॥
एक गाय ५५ मन गेहूँ सात मन हड्डो लेउ जान।
अट्ठारह मन चावल जाता है इक मिनिट के अन्दर माहि॥
देंइ असीस तुम्हें नित गोरे जुग जुग जियो भारतीय लाल।
और हिसाब दूसरा देखो कितना गया यहां से माल।
कर १२ गया कहां किसमन में थोड़ा वह भी देउ बताय॥
१९०० में ३ घटाय के ९७ सन लेउ बनाय।
कितना माल विदेशी ले गए इस भारत से हाय उठाय॥

चावल ता मन ३ करोड़ थे ६० लाख में एक घटाय।
तामें हजार और ४८-१७७ लेउ बढ़ाय॥
२६ लाख हजार ७३ अरु सो ७० मन गेंहूँ लेउ जान।
२७ लाख हजार ७४, ८ सो सात अन्य सब नाज॥
अब सन ९ और १० के अन्दर गया विदेशन कितना माल।
७७ करोड़ मन चावल जाना ६३ लाख और १४ हजार॥
तामें जोड़ो २८० मन चावल गया विलायत क्यार।
गेंहूँ २ करोड़ मन जाना ८३ लाख २५ हजार॥
अन्य नाज मन एक करोड़ गया २३ लाख ३२ हजार।
२०१ को तामें संख्या और अधिक तुम लेउ बढ़ाय।
गया नाज सन ९७ बे में २२ करोड़ मन ९० लाख॥
सन ९-१० में २१ करोड़ मन ६० लाख और तीन बढ़ाय।
कितना नाज विदेशी ले गये इन भारत से हाय उठाय॥

## आय व्यय

कितनो पैदा है भारत में अरु सचित धन का परिमाण।
१८॥-)६ पाई है वार्षिक जानो आय हमार॥
तामें २॥) और घटाय देउ यह कर अंश सातवां भाग।
शेष रहें १६-) जो है वार्षिक आय हमार।
३० अर्ब को पूंजी जानो भारतवर्ष बीच तुम जाय॥
इस हिसाब से १००) होते हैं जो अंगरेज रहे बतलाय।
ठीक हिसाब हमारे धन का डिगवी साहब ने दिया बताय॥

सञ्चित धन १४ रुपया है नकदी जेवर कुल्ल मिलाय।
यह माली हालत है भारत की अन्य देश पर करो निगाह॥
६३० इंगलैंड कमाता अस्टरिया में ३० घटाय।
तामें १५ और घटायके अमेरिका थी वार्षिक आय॥
४२० बेल्जियम जानो फ्रांस कमाते १५ घाटि।
केनाड़ा की ३ सैकड़ा ९ और अधिक लेउ जान॥
तामें ३० घटाय कर रहतो ३३० जर्मनो आय।
३३० हालैण्ड कमाते नर्वे कीमें ३० घटाय॥
तामें ५ और घटा कर स्वीजरलैंड को जानो आय।
टू हन्ड्रेड और वन फोरटी पैदा देउ इस्पेन बताय॥
तामें १५ घटि कर जानो ओस्टरया की वार्षिक आय।
१०० अरु ८० इटली जानो तामें १५ देउ घटाय॥
रूस विचारा सबसे कमती १६५ लेइ कमाय।
तुलना जब भारत से करते १६ है भारत की आय॥
भारत के गारत का रुब हो दिग्दर्शन पूरा हुइ जाय।
काऊ दिना भारत था सोने का जो अब माटी मोल बिकाय॥
संचित धन लन्दन के मांहीं ४ हजार ५ सो जान।
है भारत में १४ रुपया नगदी जेवर कुल्ल मिलाय॥
तुलना कर कर के जब हम देखें हृदय टूक २ है जाय।
कैदी से भी नीची हालत हाय हो रही आज हमार॥
जैल रिपोर्ट हमें बतलाती ११।-) प्रति कैदी जान।
एक मास में व्यय होते हैं जो हैं जैल नियम अनुसार॥

तब हमको मिलता ४॥ रुपया यह हालत है आज हमार।
अमेरिका में संचित धन है अब एक सौ अस्सी जान॥

### आमदनी

अब हिसाब दूसरा देखो क्या बड़े आदमी रहे कमाय।
यह हिसाब है प्रति व्यक्ति का सम्बन्धी भी लेउ मिलाय॥
दस हजार तो जिमींदार हैं राजा और ताल्लुकेदार॥
एक साल की उनकी पैदा पाँच हजार पौण्ड लेउ जान।
५५ हजार बड़े ब्योपारी १० हजार लें पौण्ड कमाय॥
७॥ लाख छोटे ब्योपारी ०० प्रति पौण्ड कमावें जाय।
८ करोड़ ३५ हजार हैं मामूली भारत के लाल॥
२० करोड़ प्रति साल कमावें पौण्ड नाम गिन्नी का जान।
बाकी रहे बिचारे कृषक और मजदूर जानिये आप॥
उनका तो ईश्वर ही जाने किस प्रकार करते निबाह।

### अदालत की नौकरी

अब हाल सुनो तुम जजी अदालत जो है मिर्जापुर का हाल।
कितनी तनख्वाह थी वहाँ किसकी ताकी औसत लेउ निकाल॥
जज साहब को मिले २४०० सब-जज पावें नाम* हजार।
२०० मुन्सिफ साहब पाते २०० पावें मुंसरिम साहब॥
मुत्तर्जिम १०० रुपया पाता अब औरों का सुनो हवाल।
अहलकार सब गिनों ७२ और सब नौकर लेउ सम्हार॥
५३० रुपया पाते इनकी औसत लेउ निकाल।
सब की औसत ८ रुपया प्रति महीना की जानों जाय॥

---

* ५००।

य ी हाल है सब भारत में लखि २ फटो कलेजा जाय।
कितने नौकर कितना तनख्वाह भारत म पाते हैं जाय॥
उनका भी कुछ विवरण लिख दूं इससे तुम्हें पता लग जाय।
एक साल की अब तनखा का तुमको दउ हिसाब बताय॥
१० हजार की तनखा वाले प्राय यूरुपियन जानो जाय।
५ हजार की तनखा पाते ४ हजार गोरे सरदार॥
५३५ हैं सब काले ५ से १० हजार तक पाते जाय।
एक हजार साल के नौकर भारत में चालीस हजार॥
२८ हजार तो यूरुपियन हैं ११ हजार भारतीय जान।
५०० रुपया मासिक पाते दो हजार यूरुपियन जान॥
१३४ भारतवासी ५०० मासिक पाते जाय।
कैसा दुर्दशा है भारत की कैसा दुःखभरा का हाल॥
यदि रिशवत नहीं खाय विचारे तो सब भूखों मर जायं।
और बात एक सुनो विचित्र अच्छे रूप मे ध्यान लगाय॥
कहै गवर्नर अपने मुहसे सायमन साहब से फरमाय।
१०० में ९७ सब-इन्सपेक्टर अरु इन्सपेक्टर लेना जान।
प्राय सब रिशवत को खाते हैं पुलिस मह्कमा के दरम्यान॥

## कर की कहानी अंग्रेजों की जबानी

क्या कहते हैं ब्रिटिश सहब सो सुन लेना ध्यान लगाय।
कर संबोधन वह कहत हैं अपने हृदय के उद्गार।
यू हेव डिड यू हेव डिड यूम लेसजी शब्द सुनाय॥
अथ बताय देउं अब मैं इसका हिन्दी शब्द सुनो चितलाय

मर गये मर गये पर बिन मोत मरे तुम हाय ॥
एक घटना मैं और सुनाऊं १६०० में फेर घटाय ।
ऐसरथार विन नाम था उनका माह चकमिश्नर जानो जाय ॥
पंजाब प्रांत के वह शासक थे यह रिपोट उन लिखी बनाय ॥
जांच करी मैंने गांवा की उनकी संख्या इस प्रकार है जाय ।
सात सैकड़ा और ७५ जांचे गये यहां के गांव ॥
बुरी दशा है यहां कृषकों की नहीं भरपेट अन्न वह खायं ।
गहरे करजे में डूबे हैं इनका कुछ कर देउ घटाय ॥
इतना कर यहां पर ज्यादा है हम अब अन क्यों बढ़ाय ।
उस करके हो बढ़ जानेसे है कृषकों का यहां बुरा हवाल ॥
सांचो लिखी रिपोट उन्होंने जो थी धर्म न्याय की बात ।
सत्य २ लिखने पर उनसे पद परत्याग लयो करवाय ॥
सांचों को कैसा दुरगत है झूठ मौज उड़ा रहे जाय ।
नाश होई यह शाशन प्रणाली कैसा है इसमें अन्याय ॥

## कृषकों का हालत

इसी प्रकार श्री रटमिन सन् १९०१ एक के मांहि ।
जो हते कमिश्नर कर विभाग के ब्रह्मदेश में जानो जाय ॥
उन लाट साहब की भरी सभा में कही बात देकर प्रमाण
अधिक दुरदशा है कृषकों की करके कारण जानों जाय ॥
वह भी पद से गये हटाए यह है इस शाशन का न्याय ॥
डा० हन्टर चर्लिस इलयट जो थे बङ्गाल में लाट ।

क्या कहते हैं सो तुम सुनलेउ अच्छी तरह ध्यान से लगाय।
कैसा सुख भारत के मांहि, आधे कृषक जाने नाहिं।
ब्रिटिश भारत के आधे कृषक, कैसे अपना करें निर्वाह।
वर्ष दिनों में एक दिन भी वह भरपेट अन्न नहिं खायं॥
यहाँ तक उनको ज्ञान नहीं है कैसा सुख खाने के मांहि।
खाली भरा पेट नहीं जाने नहीं सुख का नाम निसान॥
मि० लाड भी यह कहते जो सहकारी कलक्टर जान।
कानपुर में पद पर रह कर यह हिसाब उन दिया बताय
यही कहे पटना के कलक्टर और गया के कमिश्नर जान
बुरी दशा यहां के कृषकों का नहीं भर पेट अन्न वह खायं
कितने कृषक कहाँ हैं वह भी तुम्हें देऊं बतलाय।
प्रति सैकड़ा का संख्या है जो मैं तुम्हें रहा बतलाय॥
१२ कृषक हैं लन्दन में जानो पेंनीम अमरिका के माहिं।
३२ कृषक हैं जर्मन में भारत वर्ष ७१ जान।
क्या हालत है आज यहां की बिन देखेपार देखलो जाय
खेती पर ही सब निभर है कर। है यहां बुरा हवाल॥

## भारत में कोई झूठा नहीं था

मेगा अस्थनीज कहता है मैं पटने में पहुँचा जाय।
अधिक दिनों तक रहा वहां पर देखा था वहां पर यह हाल॥
कोई व्यक्ति नहीं झूठ बलना वहां पर मुझको पड़ा लखाय
कर्नल इशलीमैन कहें यह भारत धर्म न्याय की खान॥

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 285
Date 6.12.71
GOVT. OF INDIA

वहां कोई नहीं झूंठ बोलता पंचायत के भी दरम्यान।
चाहे धन प्राण जांय सब उसके नहीं झूंठ कोइ करे बयान॥
सत्य धर्म की वहां पूजा है नहीं झूंठ का नाम निशान।
पन्टोशन यूनानी कहता मैंने भारतवर्ष दरम्यान॥
नहीं किसी को झूंठा पाया भारत धर्म मूल की खान।

संस्कृत विद्या सब से आदि है

बेलाइनटन साहब फर्माते संस्कृत है उच्च महान।
सब भाषाओं की जननी है सब भाषा इसकी सन्तान॥
डवलू सी टेलर भी कहते संस्कृत है उच्च महान।
यूरुप में जितनी भाषा हैं सब हैं इन ही की सन्तान॥
संस्कृत से ही निकली हैं नहीं किंचित शक इसमें जान।
मेक्समूलर भी कहता है जो पंडित है अति विद्वान॥
पाणिन सा नहीं हुआ पृथ्वी पर वैयाकरण दूसरा जान।

स्वामी कृपालाचार्य को अमेरिका से निमन्त्रण पत्र

अब भी सन छब्बीस में देखो अमेरिका से आया तार।
इन्टर नेशनल क्लेवर्च से जो सोसाइटी वहां पर जान॥
साधु सुचित के प्रेसीडेन्टने स्वामी कृपालाचार्य के नाम।
एम ए और उपाधि उनकी साथ नाम के जोड़ो जाय।
आमन्त्रित हैं अमरीका से वहां पर कृपा करें वह आय।
वह आय पधारें अमरीका में और दो वर्ष रहें वहां जाय॥
सातसौ व्याख्यान देंय वहां पर रामचन्द्र से पुरुष महान।
जो भारत में महा पुरुष भये उनके जीवनचरित्र पर जाय॥

सातसौ डालर * प्रति प्रति डालर मिलि है उन्हें वहां पर जाय।
अब भी कीर्त है भारत की गुण का है अब भी यह हाल॥

## आयुर्वेद की प्रशँशा।

क्या कहना है डाक्टर रोयज है भारत वैद्यक की खान।
सब संसार ऋणी भारत का वैद्यक विद्य में लेउ जान॥
डाक्टर जे एफ राइल भी कहता है भारत है विद्या की खान।
बहुत प्राचीन भारत में विद्या आयुर्वेद की लेना जान॥
ग्रीस रोम यूरुप के मांहीं एल्कजेंडर बादशाह जान।
भारतीय वैद्यों का रखता था अपन महलों के दरम्यान॥
असाध्य रोग वह दूर करें थे ऐसा था भारत का मान।
हजार वर्ष के पहिले २ हारूं-रशीद खलीफा जान॥
भारतीय वैद्यों को रखना था अपना रक्षा के हित जान।
अपने स्वास्थ के रक्षा के हित करना था भारी सन्मान॥
पूजन होता था वहां उनका अब कैसा उनका अपमान।
सर्व नाश वैद्यक का देखा अंगरेजों ने दियो कराय॥
मनमानी अपनी कर कर के मेडिकल उन दये बनाय।
उनमें मुफ्त दवा जो मिलती उसका भी तुम सुनो हिसाब॥
तीन खुराकें दो पाई कीं या कुछ कम बढ़ जानों ताय।
अयुलउल अर्बी भाषा की पुस्तक में लिखा हुआ है यह हाल॥
आठवीं शताब्दी में रहते थे भारतीय पंडित विदेशन जाय।
बुगदाद देश की राज सभा में देते थे शिक्षा वह आय॥

---

* एक डालर तीन रुपये का होता है।

आयुर्वेद ज्योतिष की शिक्षा देते थे वह लेना जान।
बड़ी कदर थी वहाँ पर उनकी यह था भारत का सन्मान॥
जालीनूस रिसाले मांहीं जालीनूस ने लिक्खा जाय।
आयुर्वेद प्रथम भारत से मिश्र देश में पहुँचा जाय॥
वहाँ से यूनानिन ने सीखा उनसे अर्बिन सीखा जाय।
अर्बिन से यूरोपियन सीखा जो अब डींग रहे हैं मार॥

डा० हन्टर।

डाक्टर हन्टर क्या कहते हैं सन पन्द्रह सौ के दरम्यान।
जितने ग्रंथ बने यूरुप में वैद्यक विद्या के लेउ मान॥
उन सब में प्रमाण चरक के दिये गये हैं लेना जान।
वैद्यक विद्या में ऊंचे थे सबसे अधिक आर्य्य विद्वान॥
रसायन शास्त्र में भी आगे थे आर्य्य सबसे अधिक महान।
कोल ब्रूक और वोवर साहब बार बार यह कहें पुकार॥
सब दुनियाँ से आर्य्य ऊंचे सबके गुरू और सरदार।

हम गोरे गर्व नहीं कर सकते।

मेमायरस इण्डिया मांहीं जेलकम साहब रहा बताय॥
भारत और यूरुप से तुलना जाति भिन्न से भिन्न मिलाय।
तब मैं कहूँ गर्भ से भाई और दावा कर देउं दिखाय॥
नहीं गर्भ कर सकते गोरे इन कालों के सन्मुख आय।
एच स्ट्रेची सर्किट जज स्लेट कमेटी रिपोर्ट उठाय॥
पांच सौ एक पृष्ठ में लिक्खा यह सब सच्चा हाल हवाल।
भारतियों से नहीं हम अच्छे नहीं योग्यता में अधिकाय॥

कोई अंगरेज न्याय के पद पर भारतियों के सन्मुख आय।
नहीं गर्भ से यह कह सकता समता करे उन्हों की आय॥

## ज्योतिष गणित का प्रचार

प्रौफेसर बूगर भी कहता कोलब्रूक भी कहे पुकार।
ज्योतिष विद्या का विकाश भी भारतवर्ष से लेना जान॥
आर्य सब जग से ऊंचे हैं सबको दिया इन्होंने ज्ञान।
अर्ब देश वालों ने सीखा इनका है यह प्रबल प्रमाण॥
कहें हिन्द सा अब भी अकका फिर सीखा यहां से यूनान।
उनसे सीखा अन्य २ ने भारत है विद्या की खान॥
सब विषयों का भारत मांहीं उदय हुआ था पहिले ज्ञान।
परिपूर्ण विद्वान प्रौफेसर हारिस हैं मन विलसन नाम॥
एम-एस और आर-एन है उनकी जानो आप उपाधि।
प्रेसीडेन्ट मेडीकल मांहीं कलकत्ता में लेना जान॥
संस्कृत में परिपूर्ण हैं सर्वोपरि लेना तुम मान।
क्या कहते हैं यह निज मुख से भारत है विद्या की खानि॥
दर्शन और चिकित्सा जोतिष बीज गणित की जोति अपार।
रेखा गणित विज्ञान कला का भारत है पहला भंडार॥
शिल्प कला और तत्व ज्ञान का सबसे पहिले यहाँ प्रचार।
गूढ़ तत्व आर्यन ने खोजे यहीं सभ्यता का भंडार॥
हठ धर्मी से भले न मानें पर है ऋणी सकल संसार।
जब यूरुप में खाक नहीं थी ऐटा नामी आत्म ज्ञान॥
तब भारत में पूर्ण रूप से प्रकाशित था विद्या भानु।

# प्रार्थना।

आज कल जो भारत में स्वाधीनता का सत्याग्रह संग्राम छिड़ रहा है उसके ऊपर ध्यान देते हुए यह पुस्तक भारत के भूत, भविष्यत, वर्तमान तीनों काल जानने में पाठकों की बड़ी सहायता करेगी। हमें आशा है कि पुस्तक की रोचकता और लिपि भाषा के ऊपर ध्यान न देते हुए उसके प्रमाण युक्त भावों की ओर ही पाठक ध्यान देंगे। इसमें भारतवर्ष के सर्व नाश का इतिहास लिखा हुआ है। इसपर जितने भी आंसू बहाये जाँय थोड़े हैं। मैंने इस पुस्तक को अनेक पुस्तकों के आधार पर बनाया है। इस पुस्तक से यह पता चलेगा कि ब्रटिश शासन द्वारा भारत में अत्याचार पूर्ण कैसी घटनायें घटी हैं।

मिलने का पता:—

बाबूराम पेंगोरिया

मंत्री कांग्रेस कमेटी तहसील बाह (आगरा)